❶

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

आर्य समाज 150 स्वर्णिम वर्ष मानव सेवा के 1875 ~ 2025

वर्ष 48, अंक 25 | एक प्रति : 5 रुपये

सोमवार 14 अप्रैल, 2025 से रविवार 20 अप्रैल, 2025

विक्रमी सम्वत् 2082 | सृष्टि सम्वत् 1960853126

दयानन्दाब्द : 202 | पृष्ठ : 8

वार्षिक शुल्क : 250 रुपये | दूरभाष: 23360150

ई-मेल : aryasabha@yahoo.com

इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई के संयुक्त तत्त्वावधान में

मुम्बई में 150वां आर्यसमाज स्थापना दिवस समारोह सम्पन्न

आर्य समाज के संन्यासी, अधिकारी, विद्वान, कार्यकर्ताओं के साथ मुम्बई के सिड़को कन्वेंशन सैन्टर में उपस्थित हजारों आर्य नर-नारियों ने लिया 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम' का सामूहिक संकल्प

सम्पूर्ण विश्व को आर्य बनाने के लिए संकल्पित है -आर्यसमाज - सुरेन्द्र कुमार आर्य

विश्वधरा पर ओम् ध्वज फहराएगा-आर्यसमाज - सुरेशचन्द्र आर्य, प्रधान, सार्वदेशिक सभा

अपनी संगठनात्मक शक्ति को बढ़ाने का संकल्प ले - आर्य समाज - आचार्य देवव्रत, राज्यपाल गुजरात

आपकी अदालत के माध्यम से आर्य समाज के विचारों को जन-जन तक पहुंचाऊंगा - रजत शर्मा

150 वर्षों से मानव सेवा के पथ पर निरन्तर आगे बढ़ रहा है -आर्य समाज - पीयूष गोयल, केन्द्रीय मन्त्री

किसी भी वृक्ष के सारे बीजों में अंकुरण नहीं होता, सारे अंकुर पौधे और वृक्ष नहीं बनते, सारे पौधों, वृक्षों पर फल और फूल नहीं आते। 19वीं सदी के महामानव महर्षि दयानंद सरस्वती जी ने मुंबई की धरा पर 1875 में जिस आर्य समाज रूपी संगठन का बीजारोपण किया था, आज वह 150 वर्षों की लंबी यात्रा के साथ ही एक वटवृक्ष के रूप में विशाल और विस्तृत आकार में संपूर्ण विश्व को वेद ज्ञान के आधार पर निरंतर उन्नति, प्रगति और सफलता का मार्ग प्रशस्त कर रहा है। आज इस वृक्ष की अनेक शाखाएं जो संपूर्ण विश्व में मानव सेवा के केंद्रों के रूप में शिक्षा, सेवा, यज्ञ, योग, स्वाध्याय, सत्संग, समर्पण और राष्ट्रभक्ति के नित्य नए आयाम स्थापित कर रही हैं। गत दिनों 29, 30 मार्च 2025 को मुंबई की ऐतिहासिक धरा पर आर्य समाज के 150 वें स्थापना दिवस का दो दिवसीय भव्य आयोजन सिडको, वासी में समारोह पूर्वक संपन्न हुआ। जिसमें सार्वदेशिक सभा के निर्देशन में मुंबई आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में दो दिवसीय आर्य महासम्मेलन में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्य केंद्रीय सभा दिल्ली राज्य, भारत की प्रांतीय सभाएं और सभाओं के अंतर्गत भारत भर के आर्य समाजों, विदेश की सभाएं, गुरुकुल, कन्या गुरुकुल, आर्य विद्यालय तथा अनेक अन्य शिक्षण संस्थानों, आर्य प्रतिष्ठानों के अधिकारी, कार्यकर्ता और सदस्य पूरे उमंग उत्साह और उल्लास के साथ सम्मिलित हुए।

दो दिवसीय भव्य आयोजन का शुभारंभ महर्षि दयानंद सरस्वती जी द्वारा

- शेष पृष्ठ 3-4-5 एवं 7-8 पर

मुम्बई में आर्यसमाज के 150वें वर्ष का शुभारम्भ - आर्य महासम्मेलन के अवसर पर महर्षि दयानन्द का सन्देश श्रवण कर, उत्साह के वातावरण में आर्यसमाज के उत्थान की प्रार्थना तथा सामूहिक संकल्प लेते हुए अधिकारी, कार्यकर्ता, सदस्य आर्य एवं आर्यजनों का विशाल समूह

देववाणी-संस्कृत

दीनता त्यागपूर्वक जीवन में दृढ़ता

वेद-स्वाध्याय

क्रत्वः समह दीनता प्रतीपं जगमा शुचे। मृळ्य सुक्षत्र मृळ्य ।।
–ऋ० 7।89।3
ऋषिः-वसिष्ठः ।। देवता-वरुणः।। छन्दः-अर्षीगायत्री।।

शब्दार्थ-समह=हे तेजोयुक्त ! **शुचे** = हे दीप्यमान ! **दीनता**=दीनता, अशक्तता के कारण मैं **क्रत्वः**=अपने क्रतु से, संङ्कल्प से, प्रज्ञा से, कर्त्तव्य से **प्रतीपम्**=उलटा **जगम**=चला जाता हूँ **सुक्षत्र**= हे शक्तिवाले ! **मृळ** =मुझे सुखी कर। **मृळ्य**=मुझे सुखी कर।

विनय- हे मेरे तेजस्वी स्वामिन् ! मुझ दीन की प्रार्थना सुनो। मैं इतना दीन हूँ, इतना अशक्त हूँ कि अपने कर्त्तव्य के विरुद्ध आचरण कर देता हूँ। मैं जानता हुआ कि यह करना नहीं चाहिए, फिर भी कर देता हूँ। मैं कई शुभ संङ्कल्प करता हूँ कि आज से नित्य व्यायाम करूँगा, नित्य संध्या करूँगा, पर दीनतावश इन्हें निभा नहीं सकता। हृदय में कई अच्छी-अच्छी प्रज्ञाएँ (बुद्धियाँ) स्थान पाती हैं, पर झूठे लोक-लाज के वश में उन पर अमल करना शुरू नहीं करता। उनके विरुद्ध ही चलता जाता हूँ। यह मैं जानता होता हूँ कि मेरा 'क्रतु' क्या है- कर्त्तव्य कर्म क्या है, अन्दर से दिल कहता जाता है कि तू उलटे मार्ग पर चला जा रहा है, फिर भी मैं दुर्बल किसी भय का मारा हुआ, उसी उलटे मार्ग पर चलता जाता हूँ। हे दीप्यमान देव! हे मेरे स्वामिन्! तू मुझे वह तेज क्यों नहीं देता जिससे मैं निर्भय होकर अपने कर्त्तव्य पर डटा रहूँ, किसी के कहने से या हँसी उड़ाने से उलटा आचरण करने को प्रवृत्त न होऊँ, किसी क्लेश से डरकर अपने 'क्रतु' को न छोड़ूँ। मुझे यह अवस्था बड़ी प्रिय लगती है, परन्तु दीनतावश मैं इस अवस्था को प्राप्त नहीं कर रहा हूँ। हे 'सुक्षत्र'! हे शुभ बलवाले! मुझे अदीन बना दे। मैं दीनता का मारा हुआ तेरी शरण आया हूँ। इस दीनता के कारण मुझसे सदा उलटे काम होते रहते हैं और मेरा अन्तरात्मा मुझे कोसता रहता है, इसलिए मैं सदा बेचैन रहता हूँ। हे प्रभो! मुझे सुखी कर। मुझमें तेज देकर मेरी बेचैनी दूर कर। इस अशक्तता के कारण मैं जीवन में पग-पग पर असफल हो रहा हूँ- मेरा जीवन बड़ा निकम्मा हुआ जा रहा है। हे प्रभो! क्या कभी मेरे वे सुख के दिन न आएँगे जब मैं अपने क्रतु पर दृढ़ रहा करूँगा, अपने संङ्कल्पों पर अटल रहा करूँगा? हे मेरे स्वामिन्! ऐसी शक्ति देकर अब मुझे सुखी कर दो, मुझे सुखी कर दो।

-:साभार:-
वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

21वीं सदी के भारत में बलिप्रथा केवल चिंता नहीं, चिंतन का संकेत

मध्य प्रदेश की दर्दनाक घटना - बलि बकरे की या परिवार की?

मध्य प्रदेश के जबलपुर जिले में एक दर्दनाक हादसा हुआ। चरगवां थाना क्षेत्र के सोमती नदी के पुल पर एक तेज रफ्तार स्कॉरपियो अनियंत्रित होकर रेलिंग तोड़ते हुए नदी में जा गिरी। इस हादसे में एक परिवार के चार लोगों की मौत हो गई और दो गंभीर रूप से घायल हो गए। वाहन में एक बकरा और मुर्गा भी थे, जिन्हें बलि देने के लिए साथ लाया जा रहा था। बकरा इस हादसे में बच गया लेकिन परिवार के चार लोग मारे गए।

यह हादसा एक बार फिर तेज रफ्तार, सड़क की स्थिति और सावधानी की कमी को लेकर चिंता बढ़ाता है। साथ ही, धार्मिक बलि जैसी प्रथाओं को लेकर भी बहस तेज हो गई है। कुछ सोशल मीडिया पोस्ट्स में यह सवाल उठाया गया कि आखिर किसी बेजुबान की बलि देकर कौन सा पुण्य कमाया जा रहा है। तो कुछ ने कहा बलि बकरे की देने गए थे लेकिन परिवार की दे गए।

इस तरह की घटनाएं हमें धार्मिक परंपराओं के नाम पर हो रहे जोखिमों और जागरुकता की कमी पर सोचने को मजबूर करती हैं और प्रश्न भी खड़े करती हैं।

दरअसल, पशु बलि एक सामाजिक कुरीती है जिसमें पशुओं की बलि देवी-देवताओं को अर्पित की जाती है। इनका अंधविश्वास है कि देवताओं को भोजन के रूप में पशु अर्पित किए जाने है। जिसे लोग अपनी धार्मिक और सांस्कृतिक परंपराओं का हिस्सा मानते हैं।

असल में, पशु बलि मध्य काल की देन है। वैदिक काल में पशु बलि आदि प्रचलित नहीं थे। मध्यकाल में जब गिरावट का दौर आया तब मांसाहार, शराब आदि का प्रयोग प्रचलित हो गया। सायण, महीधर आदि के वेद भाष्य में मांसाहार, हवन में पशु बलि, गाय, अश्व, बैल आदि का वध करने की अनुमति दी थी, जिसे देखकर मैक्समुलर, विल्सन आदि पश्चिमी कथित विद्वानों ने वेदों से मांसाहार का भरपूर प्रचार कर न केवल पवित्र वेदों को कलंकित किया, अपितु लाखों निर्दोष प्राणियों को मरवा कर मनुष्य जाति को पापी बना दिया।

असल में, एक समय देश में वाम मार्ग का धड़ल्ले से प्रचार हो रहा था जो मांस, मदिरा, मैथुन, मीन आदि से मोक्ष की प्राप्ति मानता था। आचार्य सायण जैसे लोग वाम मार्ग से प्रभावित होने के कारण वेदों में मांस भक्षण एवं पशु बलि का विधान दर्शा बैठे। निरीह प्राणियों के इस तरह कत्लेआम एवं भोझिल कर्मकांड को देखकर ही महात्मा बुद्ध एवं महावीर ने वेदों को हिंसा से लिप्त मानकर उन्हें अमान्य घोषित कर दिया, जिससे वेदों की बड़ी हानि हुई एवं अवैदिक मतों का प्रचार हुआ।

विडंबना यह थी कि सालों साल बीत रहे थे, किन्तु किसी ने भी आस्था और धर्म के नाम पर चल रहे निरीह प्राणियों के इस कत्लेआम के विरुद्ध आवाज नहीं उठाई। विरोध न करने का परिणाम यह हुआ कि आम लोगों ने भी यही मान लिया कि हमारे वैदिक ग्रंथों के अनुसार ही बलि दी जा रही है।

वो तो भला हो महषि दयानंद सरस्वती जी का, जिन्होंने इस कत्लेआम के खिलाफ बिगुल फूंका और वेदों के सही वेद भाष्य में मांस भक्षण, पशु बलि आदि को लेकर जो भ्रांति देश में फैली थी, उसका निवारण कर साधारण जनमानस के मन में वेद के प्रति श्रद्धा भाव उत्पन्न किया और प्राणी मात्र की उपयोगिता का संदेश समाज को दिया।

वैदिक विद्वान मानते हैं कि अश्वमेध शब्द का अर्थ यज्ञ में अश्व की बलि देना नहीं है, अपितु शतपथ राष्ट्र के गौरव, मानव कल्याण और विकास के लिए किए जाने वाले सभी कार्य "अश्वमेध" हैं। गौ मेध का अर्थ यज्ञ में गौ की बलि देना नहीं है, अपितु अन्न को दूषित होने से बचाना, अपनी इन्द्रियों को वश में रखना, सूर्य की किरणों से उचित उपयोग लेना, धरती को पवित्र या साफ़ रखना - 'गोमेध' यज्ञ है। 'गो' शब्द का एक और अर्थ है पृथ्वी। पृथ्वी और उसके पर्यावरण को स्वच्छ रखना 'गोमेध' कहलाता है।

मध्य प्रदेश के जबलपुर जिले में एक दर्दनाक हादसा हुआ। चरगवां थाना क्षेत्र के सोमती नदी के पुल पर एक तेज रफ्तार स्कॉरपियो अनियंत्रित होकर रेलिंग तोड़ते हुए नदी में जा गिरी। इस हादसे में एक परिवार के चार लोगों की मौत हो गई और दो गंभीर रूप से घायल हो गए। वाहन में एक बकरा और मुर्गा भी थे, जिन्हें बलि देने के लिए साथ लाया जा रहा था। बकरा इस हादसे में बच गया लेकिन परिवार के चार लोग मारे गए।

यह हादसा एक बार फिर तेज रफ्तार, सड़क की स्थिति और सावधानी की कमी को लेकर चिंता बढ़ाता है। साथ ही, धार्मिक बलि जैसी प्रथाओं को लेकर भी बहस तेज हो गई है। कुछ सोशल मीडिया पोस्ट्स में यह सवाल उठाया गया कि आखिर किसी बेजुबान की बलि देकर कौन सा पुण्य कमाया जा रहा है। तो कुछ ने कहा बलि बकरे की देने गए थे लेकिन परिवार की दे गए।

नरमेध का अर्थ मनुष्य की बलि देना नहीं है, अपितु मनुष्य की मृत्यु के बाद उसके शरीर का वैदिक रीति से दाह संस्कार करना नरमेध यज्ञ है। मनुष्यों को उत्तम कार्यों के लिए प्रशिक्षित एवं संगठित करना नरमेध या पुरुषमेध यज्ञ कहलाता है। अजमेध का अर्थ बकरी आदि की यज्ञ में बलि देना नहीं है, अपितु अज कहते हैं बीज, अनाज या धान आदि कृषि की पैदावार बढ़ाना है। अजमेध का सीमित अर्थ अग्निहोत्र में धान आदि की आहुति देना है।

किन्तु पहले वाम मार्ग की गलत व्याख्या, उसके बाद मध्य काल में इस गलत व्याख्या को आस्था से जोड़ना। इसके बाद मेक्समूलर जैसे लोगों के प्रपंचों और पंडितों के कारण आज भी इसका दंड निरीह प्राणी भुगत रहे हैं। ना केवल निरीह प्राणी, बल्कि इस आधुनिक काल में इंसान भी शिकार बन रहे हैं।

ज्यादा दिन नहीं बीते, हाथरस में स्कूल की तरक्की के लिए क्लास-2 के बच्चे की हत्या की गई, मालिक पर 20 लाख का कर्ज हो गया था। जब कोई ऑप्शन नहीं दिखा, तो अपने तांत्रिक पिता की बातों में आ गया। फिर उसने बच्चे की हत्या कर डाली।

- शेष पृष्ठ 7 पर

150वाँ आर्यसमाज स्थापना दिवस विशेष संकल्पों के साथ सम्पन्न

प्रथम पृष्ठ का शेष

स्थापित काकड़वाड़ी आर्य समाज की यज्ञ ज्योति से प्रज्वलित अग्निहोत्र में आहुति देकर किया गया, मुंबई आर्य समाजों के पुरोहित, धर्माचार्य, विद्वानो के साथ यज्ञ ब्रह्मा आचार्य वागीश जी के नेतृत्व में श्रीमती एवं श्री सुरेंद्र कुमार आर्य जी, श्री सुरेश चंद्र आर्य जी, श्री धर्मपाल आर्य जी, श्रीमती एवं श्री आनंद गुप्ता जी, श्री अरुण प्रकाश वर्मा जी इत्यादि महानुभावों ने यज्ञ में आहुति देकर विश्व कल्याण की कामना की। इससे पूर्व विशाल शोभायात्रा का भव्य आयोजन किया गया, जिसमें आर्य संन्यासी बघ्घियों में, आर्य समाज के युवा नर-नारी घोड़ों पर, आर्य वीर वीरांगनाएं व्यायाम प्रदर्शन करते हुए, लाठी, तलवार, भाले एवं सर्वांगसुन्दर व्यायाम करते हुए, आर्य समाज के अधिकारी, कार्यकर्ता, सदस्य हाथों में ओम ध्वज लेकर महर्षि दयानन्द और आर्य समाज का जय-जयकार करते हुए आगे बढ़ रहे थे, यज्ञ की झांकी और मधुर भजनों के साथ हर आयु वर्ग के लोग अत्यन्त उमंग उत्साह के साथ 150वें स्थापना वर्ष पर अपने मन को आर्य समाज के सेवा कार्यों के प्रति संकल्पित कर रहे थे, इस विशाल शोभा यात्रा का कई स्थानों पर स्वागत किया गया और कार्यक्रम स्थल पर आकर एक समारोह के रूप में परिवर्तित हो गयी। सर्वप्रथम संन्यासी वृद्धों का सम्मान किया गया और इसके उपरांत जेबीएम ग्रुप के अध्यक्ष श्री सुरेंद्र कुमार आर्य जी ने सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री सुरेश चंद्र आर्य जी के साथ ध्वजारोहण किया और सब ने मिलकर ध्वज गीत गया। कार्यक्रम स्थल पर पूरा दिन यज्ञ चलता रहा, जिसमें सभी आर्य नर नारियों ने आहुति देकर विश्व मंगल की कामना की। कार्यक्रम में अनेक गणमान्य लोग उपस्थित हुए जिसमें आचार्य देवव्रत जी, राज्यपाल गुजरात, इंडिया टीवी के चेयरमैन एवं एडिटर इन चीफ श्री रजत शर्मा, उद्योग एवं वाणिज्य मंत्री श्री पीयूष गोयल जी, उत्तर प्रदेश सरकार के मंत्री श्री स्वतंत्रदेव जी, श्री आशीष शेलार जी, संस्कृति मंत्री महाराष्ट्र सरकार इत्यादि आर्य विद्वान, संन्यासी एवं नर-नारी उपस्थित हुए। मुंबई सभा की ओर से महिलाओं ने सामूहिक स्वागत गीत प्रस्तुत किया। कार्यक्रम में विभिन्न सम्मेलनों का आयोजन संपन्न हुआ। जिनमें आर्य समाज की ओर से अनेक आर्य नेता, विद्वान, संन्यासियों ने आर्य समाज की उन्नति, प्रगति, सफलता और इतिहास से प्रेरणा लेने की बात कही। अनेक नाटकों का मंचन हुआ, विशेष रूप से मुंबई में आर्य समाज की स्थापना को आधार बनाकर मंचन किए गए, नाटक को देखकर ज्ञात हुआ कि मुंबई में प्रथम आर्य समाज की स्थापना महर्षि ने की परिस्थितियों में और किस प्रकार की, इस दृश्य को देखकर सभी अभिभूत हो गए।

30 मार्च को स्वामी प्रणवानंद जी, स्वामी देवव्रत जी ने अपने उद्बोधन में शिक्षा के आधार स्तंभ गुरुकुलों की स्थापना करने के लिए आवाहन किया और वेद के प्रचार-प्रसार से ही विश्व का कल्याण होगा, इस विषय पर अपने विचार प्रस्तुत किये , गुरुकुल के बच्चों का प्रेरक गीत 'युग-युग जीवे आर्य समाज' अत्यंत लोकप्रिय सिद्ध हुआ। गुरुकुल की ब्रह्मचारिणियों ने चारों वेदों के मंत्रों का पाठ किया, नव वर्ष के भजन सभी के मन को अत्यंत मधुरता के साथ नवीनता का संदेश दे रहे थे, मुंबई की समस्त आर्य समाजों के अधिकारियों को सम्मानित किया गया, पूरी टीम को इस भव्य आयोजन के लिए बधाई दी गई। इस अवसर पर पूरे भारत से पधारे प्रांतीय सभाओं के अधिकारियों के साथ में टंकारा ट्रस्ट, शुद्धि सभा, परोपकारिणी सभा, अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ, उदयपुर न्यास, मॉरीशस, म्यांमार, आदि देशों से पधारे हुए समस्त अधिकारियों को मंच पर सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम में विशेष रूप से महर्षि दयानंद सरस्वती जी के संदेश को, उनके उपदेश को और उनकी प्रेरणा को शिरोधार्य करते हुए गायत्री मंत्र, ईश्वर स्तुति प्रार्थना का प्रथम और अंतिम मंत्र का पाठ करते हुए संगठन सूक्त का सामूहिक पाठ किया गया और महर्षि दयानंद सरस्वती जी के संदेश को सुनते हुए सभी ने आर्य समाज के इतिहास से प्रेरणा ली और भविष्य में आर्य समाज के प्रचार-प्रसार का और **'कृण्वन्तो विश्वमार्यम'** का संकल्प लिया।

सर्वदेशिक सभा के प्रधान श्री सुरेश चंद्र आर्य जी ने उपस्थित आर्य समाज के अधिकारियों, आर्य नर नारियों और विद्यार्थियों को सामूहिक संकल्प कराया। आचार्य देवव्रत जी, राज्यपाल गुजरात ने अपने प्रेरक उद्बोधन में कहा कि संगठनात्मक शक्ति को आगे बढ़ाना है, आर्य समाज और महर्षि के विचारों को जन जन तक पहुंचाने का संकल्प लेना

- शेष पृष्ठ 7 पर

मुबई में 150वां आर्यसमाज दिवस : आर्य महासम्मेलन

श्री रजत शर्मा जी का उद्बोधन

चेयरमैन एंड एडिटर इन चीफ, इंडिया टीवी

आर्य समाज के 150 वें स्थापना दिवस पर आयोजित दो दिवसीय आर्य महा सम्मेलन के अवसर पर इंडिया टीवी के चेयरमैन और एडिटर इन चीफ रजत शर्मा जी ने महर्षि दयानंद सरस्वती जी को नमन करते हुए अपने उद्बोधन में कहा कि समाज में व्याप्त भ्रांतियों और कुरीतियों को आर्य समाज ने कम किया, आर्य समाज ने राष्ट्र की विरासत और वेद को प्रकाश में लाने का काम किया है। उन्होंने आर्य समाज के लोगों को संबोधित करने के साथ ही उनके सवालों के जवाब भी दिए। आपने आगे कहा कि आर्य समाज ने 150 वर्ष पूरे किए हैं. इस समारोह में ऋषि दयानंद के संदेशवाहकों को संबोधित करने का अवसर मिला, आर्य समाज ने वेद और विरासत को घर-घर पहुंचाने के लिए सराहनीय काम किया है, समाज की कुरीतियों और अंधविश्वास को मिटाने के लिए अथक प्रयास किया है, धर्म के नाम पर आडंबर को समाप्त करने का महान कार्य किया है।

मैं आज यहां आर्य समाजियों की शक्ति को नमन करने के लिए आया हूं, गुलामी के दौर में स्वामी दयानंद सरस्वती ने देश को रास्ता दिखाया। महात्मा गांधी, लाला लाजपत राय जैसे कई नेताओं ने आर्य समाज से प्रेरणा ली। आजादी की लड़ाई को दयानंद सरस्वती ने धर्मयुद्ध का नाम दिया। जब देश में कुरीतियां थीं तब राष्ट्र को जगाने का काम आर्य समाज ने किया। राष्ट्र की विरासत को, वेद को प्रकाश में लाने का काम आर्य समाज ने किया। आर्य समाज आध्यात्मिक राष्ट्रवाद का प्रेरणा पुंज है, देश और धर्म के लिए आर्य समाज ने और आपके पुरखों ने जीवन खपा दिया।

रजत जी ने कहा कि आर्य समाज ही है जिसने नारी को सम्मान दिया। उन्होंने हाल की एक घटना का उल्लेख करते हुए कहा कि एक पादरी जो बच्चियों का रेप करता था, उसे कल सजा हुई। ऐसी घटनाओं को जब देखते हैं तो लगता है समाज को अंधकार से कौन निकालेगा ? ऐसे में जवाब मिलता हैं कि अंधकार से आर्य समाज निकालेगा। आर्य समाज ने नारी को सम्मान दिया। आज देश में नारी को कोई जगा सकता है तो वो आर्य समाज है। कोई दूसरी संस्था नहीं जो देश की विरासत को दुनिया में पहुंचा सके,

समाज में नैतिक अपराध करने वाले, धोखा देने वाले बढ़ रहे हैं तो इसे अगर को बदल सकता है तो वो आर्य समाज है। आज दुनिया में खून की नदियां बह रही हैं, बम बरसाए जा रहे हैं। आज दुनिया भारत को उम्मीद की नजर से देख रही है। आज भारतीयों को गौरव की नजर से देखा जाता है। रजत शर्मा ने जोर देकर कहा-' इस देश में ऐसी दूसरी संस्था नहीं है जो हमारी विरासत को दुनिया में पहुंचा सकें ये आप (आर्य समाज) कर सकते हैं।' उन्होंने आर्य समाज के गौरवपूर्ण इतिहास का जिक्र किया और कहा कि किसी भी संस्था के लिए 150 वर्ष पूरे करना साधारण बात नहीं है। आपमें राष्ट्रप्रेम है, आपने गरीब-आदिवासियों को जोड़ने का काम किया है। आपने कवि दुष्यंत कुमार की पंक्तियां पढते हुए कहा-

हो गई है पीर पर्वत सी, इस हिमालय से गंगा निकलनी चाहिए।
मेरे सीने में न सही, तेरे सीने में सही, हो कहीं भी आग,
लेकिन आग जलनी चाहिए।"

'आप की अदालत' के जरिए आर्य समाज की बातों को जनता तक पहुंचाऊंगा

इस अवसर पर सवाल-जवाब के विशेष सेशन में एक सवाल के जवाब में उन्होंने कहा कि 'सत्यार्थ प्रकाश' (स्वामी दयानंद सरस्वती की लिखी हुई पुस्तक) को हमने पढ़ा है। मैं वादा करता हूं कि मेरे जीवनकाल में, 'आप की अदालत' के जरिए आर्य समाज की बातों को जितना पहुंचा सकता हूं, पहुंचाऊंगा। सनातन के सवाल पर रजत शर्मा ने कहा कि सनातन को मानने वाले बड़े-बड़े लोग सरकार में बैठे हैं, बड़ी-बड़ी कंपनियों में हैं। लेकिन दुख की बात है कि हमारे देश में कुछ ऐसे लोग हैं जो सनातन का अपमान करते हैं। भारत की मूल संस्कृति, सनातन धर्म यही धर्म निरपेक्षता है।

युवाओं को उनकी भाषा में वेदों के बारे में बताना होगा

इस अवसर पर रजत शर्मा ने कुछ सुझाव भी सामने रखे। उन्होंने कहा कि हमारे देश में बहुत युवा डिजिटल मीडिया से जुड़े है। आर्य समाज की वेबसाइट उतनी वायब्रंट नही है, इसलिए इसे और मजबूत बनाएं ताकि ज्यादा से ज्यादा लोग इसे देखें। एक अन्य सवाल के जवाब में उन्होंने कहा कि आज की पीढ़ी को किसी चीज के लिए फोर्स नहीं कर सकते हैं क्योंकि उनके पास जानकारी का एक्सेस है। वेद, सनातन को उनकी भाषा में रोचक तरीके से बताना होगा। इस बार प्रयागराज महाकुंभ में 40 फीसदी युवा गए थे। हमें युवाओं को उनकी भाषा में बताना है। कार्यक्रम के समापन के बाद रजत शर्मा जब कार्यक्रम स्थल से निकलने लगे तो हजारों की संख्या में लोग उनसे मिलने पहुंचे। रजत शर्मा के साथ लोगों ने सेल्फी ली और इस प्रोग्राम में आने के लिए उनका आभार जताया। ❑

साप्ताहिक
आर्य सन्देश
14 अप्रैल, 2025 से 20 अप्रैल, 2025

आर्य महासम्मेलन से हुआ मुम्बई में आर्यसमाज के 150वें स्थापना वर्ष का भव्य शुभारम्भ

150वें स्थापना दिवस पर विशेष यज्ञ, विशाल शोभायात्रा, महिलाओं द्वारा स्वागत गीत, भजन, विभिन्न वनवासी क्षेत्रों से आर्यसमाज के गुरुकुल में शिक्षा प्राप्त कर रहे बच्चे एवं सिडको कन्वैंशन सैन्टर वाशी, मुम्बई में उपस्थित आर्यजनों के विशाल समूह का विहंगम दृश्य

साप्ताहिक
आर्य सन्देश
14 अप्रैल, 2025
से
20 अप्रैल, 2025

सम्मेलन में पधारे अतिथियों – माननीय आचार्य देवव्रत जी, श्रीमान रामरिछपाल आर्य एवं श्रीमती विशुद्धा आर्या, सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री सुरेन्द्रचन्द्र आर्य, श्री रजत शर्मा, श्री पीयूष गोयल, श्री स्वतन्त्रदेव सिंह जी एवं मुम्बई, दिल्ली एवं प्रान्तीय सभाओं तथा आर्य संस्थानों के अधिकारियों का सम्मान, सांस्कृतिक कार्यक्रम, नाटिका, व्यायाम प्रदर्शन

साप्ताहिक स्वाध्याय

परोपकारिणी सभा का निर्माण

गतांक से आगे-

'मैं स्वामी दयानन्द सरस्वती निम्नलिखित नियमों के अनुसार तेईस (23) सज्जन आर्यपुरुषों की सभा को वस्त्र, पुस्तक, धन और यन्त्रालय आदि अपने सर्वस्व का अधिकार देता हूं और उसको परोपकार सुकार्य में लगाने के लिए अध्यक्ष बनाकर यह स्वीकार पत्र लिखे देता हूं कि समय पर काम आवे।'

इस प्रकार परोपकारिणी सभा महर्षि की उत्तराधिकारिणी बनाई गई थी। 23 सभासदों में से सभापति का स्थान मेवाड़पति महाराणा सज्जनसिंह को प्रदान किया गया था। सभासदों में कई राजपूत नरेश और रईस थे। उनके अतिरिक्त देशभर के प्रसिद्ध आर्यपुरुष और महर्षि के शिष्यों के नाम सभासदों की सूची में प्राप्त होते हैं। रायबहादुर रानडे, रायबहादुर पं. सुन्दरलाल, राजा जयकृष्णदास, लाला साईंदास, पं श्यामजी कृष्ण वर्मा आदि महानुभावों को सभा के सभासद् बनाया गया था।

परोपकारिणी सभा के सभ्यों की सूची का ध्यानपूर्वक अवलोकन हमें बतला सकता है कि जीवन काल में ही महर्षि का प्रभाव कितना विस्तृत हो चुका था।

सभा के अन्य उद्देश्यों पर ध्यान देने से महर्षि के महान् उद्देश्य का परिचय मिलता है। पहला उद्देश्य है- महर्षि जी की सम्पत्ति को वेद और वेदांग आदि के पढ़ने-पढ़ाने में और वैदिक ग्रन्थों के छपवाने में व्यय करना। शिक्षा का प्रबन्ध और पुस्तक प्रकाशन, ये दो ही विभाग इतने हैं कि एक सभा के लिए पर्याप्त हैं। दूसरा उद्देश्य रखा गया- देश और देशान्तर में भेजने के लिए उपदेशक-मण्डलियों के प्रबन्ध में सम्पत्ति का व्यय करना। तीसरा उद्देश्य है- भारत के दीन और अनाथ-जनों को सहायता देना। कितने विस्तृत उद्देश्य हैं! लेख और वाणी द्वारा देश और विदेश में प्रचार परोपकारिणी सभा का पहला कर्तव्य है। दूसरा कर्तव्य है 'वैदिक शिक्षा का प्रबन्ध'। उसका अन्तिम कर्त्तव्य दीनों और अनाथों को उठाना और उनकी सहायता करना है। महर्षि ने परोपकारिणी सभा का बड़ा भारी प्रोग्राम था। वह परोपकारिणी सभा को अपना उत्तराधिकारी और आर्यसमाज का रक्षक बनाना चाहते थे।

वसीयतनामे के अन्तिम भाग में सभा के साधारण नियम हैं। सभा में वही रह सकेगा, जो सदाचार पूर्वक जीवन बिताए। दुराचारी को निकाल दिया जायगा। अधिक समय तक कोई स्थान रिक्त नहीं रह सकेगा। यदि सभा में कोई झगड़ा उठे तो सभा में फैसला होने की अन्य कोई भी सूरत होने तक उसे कचहरी में नहीं ले- जाना चाहिए। यदि कोई सूरत बाकी न रहे, तो न्यायालय से निर्णय होना चाहिए। ये नियम दिखलाते हैं कि सार्वजनिक संगठनों के निर्माण में महर्षि दयानन्द सिद्धहस्त थे और सभ्यों की शक्ति को परिमित करने के लाभों को खूब समझते थे।

इन उद्देश्यों से और इन नियमों से महर्षि ने परोपकारिणी सभा का निर्माण किया, और अपनी सार्वजनिक सम्पत्ति सभा को सौंप दी। अपने जीवन-काल में ही प्रेस, पुस्तक आदि सभा को दे दिये। महर्षि को सभा से बड़ी आशाएं थीं। वह सभा द्वारा केवल अपनी सार्वजनिक सम्पत्ति को ही सुरक्षित नहीं करना चाहते थे, वह राजाओं और अन्य शिक्षित महानुभावों को इकट्ठे बिठाकर एक-दूसरे के समीप लाना चाहते थे। वह राजपूताना के अशिक्षित नरेशों को भारतहित के सार्वजनिक कार्यों में लगाना चाहते थे। परोपकारिणी का निर्माण उस सपने का फल था जो चित्तौड़ की चोटियों पर खड़े होकर महर्षि ने देखा था। महर्षि इस सभा द्वारा सोए हुए राजपूताना शेर को जगाना चाहते थे। वह आर्य जाति द्वारा मनुष्यजाति के धार्मिक और सामाजिक उद्धार का नेतृत्व आर्य नरेशों के हाथ में देना चाहते थे। यह दूसरा प्रश्न है कि परोपकारिणी सभा को कहां तक सफलता हुई। पूरी सफलता

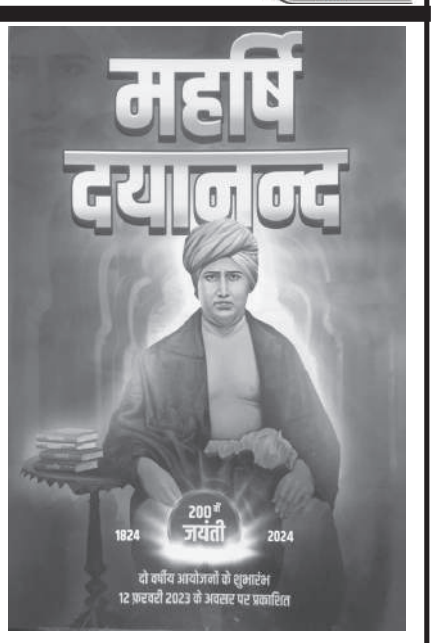

न होने के कई कारण हुए। पहला कारण तो महर्षि का शीघ्र ही स्वर्गवास होना था। दूसरा कारण महर्षि के थोड़े ही समय पीछे उदयपुर नरेश का देहान्त था। तीसरा कारण यह था कि आर्यसमाज का प्रतिनिधियों द्वारा संगठन बहुत शीघ्र ही बन गया, और आर्य-प्रथा की सम्पूर्ण शक्तियां उधर ही लग गई।

-क्रमशः

पं. इन्द्र विद्यावाचस्पति जी द्वारा
लिखित एवं 200 वीं जयन्ती पर
पुनः प्रकाशित जीवनी
'महर्षि दयानन्द' से साभार
पुस्तक प्राप्ति के लिए ऑन लाइन
www.vedicprakashan.com
अथवा 9540040339 पर आर्डर करें।

Continue From Last Issue

Organising Paropkarini Sabha

I, Swami Dayanand Saraswati, according to the following rules, give the rights of all my clothes, books, money and machinery etc. to the assembly of twenty-three (23) gentlemen Aryapurushas, and make them the president to use them for charitable work, and give this acceptance letter that the work will be done on time.

In this way the Paropakarini Sabha was made the successor of the sage. Out of 23 councilors, the place of Chairman was given to Mewarpati Maharana Sajjan Singh. There were many Rajput kings and nobles among the members. In addition to them, the names of famous Arya Purush and Rishi's disciples from all over the country are found in the list of councilors. Raibahadur Ranade, Raibahadur Pt. Sundarlal, Raja Jaykrishnadas, Lala Saindas, Pt Shyamji Krishna Verma etc. great personalities were made members of the assembly. A careful analysis of the list of dignitaries of the Paropakarini Sabha can tell us how widespread the sage's influence had become during his lifetime.

By paying attention to the other objectives of the assembly, the sage's great purpose is introduced. The first objective is to spend Swami ji's wealth in the study and teaching of Vedas and Vedang etc. and in the printing of Vedic books. Management of education and publication of books, these two departments are sufficient for a meeting. The second objective was set - to spend the property in the management of preaching groups to send them to the country and abroad. The third objective is to help the poor and orphans of India. What a wide range of objectives! Propaganda in the country and abroad through letter and speech is the first duty of the Philanthropic Sabha. The second duty is the management of Vedic education. Its ultimate duty is to raise and help both the orphans. Rishi had a big program of the charity meeting. He wanted to make Paropakarini Sabha his successor and protector of Arya Samaj.

The last part of the will contains the general rules of the Sabha. Only those who lead a virtuous life will be able to remain in the assembly. The miscreant will be fired. No position will be able to remain vacant for long. If a dispute arises in the assembly, it should not be taken to the court until there is some other way of deciding it in the assembly. If there is no alternative left, then there should be a decision from the court. These rules show that Rishi Dayanand was perfect in building public organizations and understood the benefits of limiting the power of civilized people.

For these purposes and with these rules, the sage created the Philanthropic Assembly, and handed over his public property to the assembly. During his lifetime, he gave the press, books etc. to the gathering. The sage had high hopes from the gathering. He did not want to secure only his public property through the assembly, he wanted to bring the kings and other educated noblemen closer to each other by making them sit together for planning. He wanted to engage the uneducated princes of Rajputana in public work for the benefit of India. Organising of Paropakarini Sabha was the result of a dream which was seen by the sage while standing on the peaks of Chittor. The sage wanted to wake up the sleeping Rajputana lion by this assembly. He wanted to hand over the leadership of the religious and social emancipation of mankind by the Aryan race to the Aryan kings.

This is another question as to how far the Paropakarini Sabha was successful. There were many reasons for not being a complete success. The first reason was the early death of the sage. The second reason was the death of Udaipur king shortly after the sage.

The third reason was that the organization of Arya Samaj was formed very soon by the representatives, and the whole system of Arya-pratha started there itself.

To be Continue.....

With courtesy by the biography of "Maharshi Dayanand" re-published on the occasion of 200th birth anniversary and written by Pt. Indra Vidyavachaspati Ji. To buy online login WWW.vedicprakshan.com or contact - 9540040339

साप्ताहिक
आर्य सन्देश
14 अप्रैल, 2025 से 20 अप्रैल, 2025

पृष्ठ 2 का शेष

21वीं सदी के भारत में .....

थोड़े समय पहले हैदराबाद में एक व्यक्ति ने एक बच्चे की बलि दे दी थी। उसने एक तांत्रिक के कहने पर चंद्र ग्रहण के दिन पूजा की और बच्चे को छत से फेंक दिया। तांत्रिक ने उसे कहा था कि ऐसा करने से उसकी पत्नी की लंबे समय से चली आ रही बीमारी ठीक हो जाएगी। ऐसी न जाने कितनी घटनाएँ हर रोज सुनने को मिलती हैं।

यदि देखा जाए तो आज समाज में अंधविश्वास का बाजार इतना बड़ा और बढ़ चुका है कि जिसकी चपेट में पढ़े-लिखे लोग भी उसी तरह आते दिख रहे हैं, जिस तरह अशिक्षित लोग। जबकि यह लंबे संघर्ष के बाद मानव सभ्यता द्वारा अर्जित किए गए आधुनिक विचारों और खुली सोच का गला घोंटने की कोशिश है। ऐसी घटनाएं पहले पूरे विश्वभर में होती रही हैं, लेकिन समय के साथ लोगों ने आधुनिकता को अपना लिया। पर भारत में धर्म के नाम पर यह सब कुछ पूर्व की भांति चल रहा है। क्योंकि बलि के पीछे के तर्क सामान्य रूप से धार्मिक बलिदान जैसे ही हैं। बलि का अभीष्ट उद्देश्य अच्छी किस्मत लाना और देवताओं को प्रसन्न करने की लालसा आदि में होता है। हमें नहीं पता कि रक्त से प्रसन्न होने वाले इन काल्पनिक देवताओं को देवता कहें या राक्षस?

प्राचीन जापान में, किसी इमारत निर्माण की नीव में अथवा इसके निकट प्रार्थना के रूप में किसी कुंवारी स्त्री को जीवित ही दफन कर दिया जाता था, जिससे कि इमारत को किसी आपदा अथवा शत्रु-आक्रमण से सुरक्षित बनाया जा सके। दक्षिण अमेरिका में भी नरबलि का लंबा इतिहास रहा है। शासकों की मौत और त्योहारों पर लोग उनके सेवकों की बलि दिया करते थे।

पश्चिमी अफ्रीका में उन्नीसवी सदी के आखिर तक नरबलि दी जाती थी, या फिर चीन की महान दीवार के बारे में कहा जाता है कि उसे अनगिनत लाशों पर खड़ा किया गया था। लेकिन वह पौराणिक काल था, जिसमें मानव सभ्यता ज्ञान से दूर थी। हाँ, इसमें भारत का वैदिक कालखंड सम्मिलित नहीं होता, क्योंकि वेदों में ऐसे सैकड़ों मंत्र और श्लोक हैं, जिससे यह सिद्ध किया जा सकता है कि वैदिक धर्म में बलि प्रथा निषेध है और यह प्रथा हमारे धर्म का हिस्सा नहीं है। जो बलि प्रथा का समर्थन करता है, वह धर्मविरुद्ध दानवी आचरण करता है। किन्तु जब धर्म की सच्ची शिक्षा देने वाले ऋषि-मुनियों के अभाव में अज्ञान व अंधविश्वास, पाखंड एवं कुरीतियां तथा मिथ्या परंपराएं आरंभ हो गईं, उनके स्थान पर ढोंगी, पाखंडियों के डेरे सजने लगे, तब इसका परिणाम देश की गुलामी था। इनके कारण देश को अनेक विषम परिस्थितियों से गुजरना पड़ा और आज भी देश की धार्मिक व सामाजिक स्थिति संतोष जनक नहीं है। इस स्थिति को दूर कर विजय पाने के लिए देश से अज्ञान व अंधविश्वासों का समूल नाश करना जरूरी है, वरना धार्मिक तबाही पिछली सदी से कई गुना बड़ी होगी।

यदि सरकार राष्ट्रीय स्तर पर कानून बनाकर अंधविश्वास फैलाने वाले तत्वों के खिलाफ, उनका प्रचार-प्रसार कर रहे लोगों के खिलाफ एक्शन लेने का प्रावधान बना दे, तो आज भी काफी कुछ समेटा जा सकता है। ये सच है कि कानून तो अमल के बाद ही समाज के लिए उपयोगी बन पाता है, किंतु फिर भी उम्मीद है कि 21वीं सदी के दूसरे दशक में पहुंच चुके हमारे समाज को ऐसे ऐतिहासिक कानून की आंच में विश्वास और अंधविश्वास के बीच अंतर समझने में कुछ तो मदद मिलेगी। हमारा अतीत भले ही कैसा रहा हो, पर आने वाली नस्लों का भविष्य तो सुधर ही जाएगा। *-संपादक*

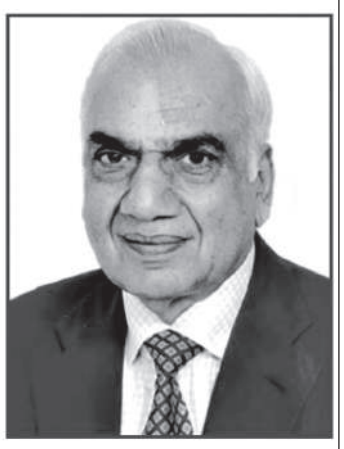

लाला दीवानचन्द ट्रस्ट के प्रधान बनें सुप्रसिद्ध उद्योगपति श्री योगेश मुंजाल जी

महर्षि दयानन्द जी के अनन्य शिष्य, सफल उद्योगपति, समाज सेवी, डी.ए.वी. कॉलेज प्रबन्धकृत्री समिति के उप प्रधान, टंकारा ट्रस्ट के प्रधान, महात्मा सत्यानन्द मुंजाल जी के सुपुत्र एवं मुंजाल शोवा लिमि. के चेयरमैन श्री योगेश मुंजाल जी को सर्वसम्मति से लाला दीवानचन्द ट्रस्ट का प्रधान निर्वाचित किया गया है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं दिल्ली के समस्त आर्यसमाजों एवं आर्य संस्थानों की ओर से प्रधान निर्वाचित किए जाने पर श्री योगेश मुंजाल जी को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं प्रेषित करते हैं तथा परमपिता परमात्मा से उनके उत्तम स्वास्थ्य एव दीर्घायुष्य की प्रार्थना करते करते हैं, जिससे कि उनके नेतृत्व में न केवल लाला दीवानचन्द ट्रस्ट अपितु ट्रस्ट द्वारा पोषित समस्त संस्थान दिनोंदिन उन्नति प्राप्त करते रहें।

पृष्ठ 3 का शेष

150वाँ आर्यसमाज स्थापना दिवस ......

है। आर्य समाज एक आंदोलनकारी संस्था है, हमें देश के उज्जवल भविष्य के लिए लगातार प्रयास करते रहना है। इस अवसर पर श्री सुरेंद्र कुमार आर्य जी अध्यक्ष जेबीएम ग्रुप एवं ज्ञान ज्योति पर महोत्सव आयोजन समिति, अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ के पूज्य माता-पिता श्री रामरिछपाल आर्य जी एवं श्रीमती विशुद्धा आर्या जी को आर्य समाज की ओर से आर्य गौरव सम्मान से सम्मानित किया गया। पूरे कार्यक्रम में आर्य युवा वक्ताओं के वक्तव्य प्रभावित करते रहे, जिनमें श्री योगेंद्र याग्निक जी, आचार्य वागीश जी, श्री गौतम खट्टर जी इत्यादि महानुभावों ने प्रेरणा प्रद उद्बोधन दिए।

इस अवसर पर श्री पीयूष गोयल जी उद्योग एवं वाणिज्य मंत्री ने अपने विशेष उद्बोधन में आर्य समाज के 150 वें स्थापना दिवस पर उपस्थित आर्यजनों को, आयोजकों को बधाई देते हुए आर्य समाज से जुड़े अपने पिता माता और स्वयं के संस्मरणों को गौरवपूर्ण तरीके से बताते हुए कहा की आर्य समाज पिछले 150 वर्षों से लगातार मानव सेवा और राष्ट्र निर्माण के कार्यों को आगे बढ़ता आ रहा है। उन्होंने अपने पिताजी की शिक्षा आर्य समाज में हुई और यज्ञ से उनका जीवन किस तरह से जुड़ा हुआ है, आर्य समाज से वह कैसे प्रभावित हैं और निरंतर आर्य समाज मानव सेवा के कार्यों को विधिवत कर रहा है, अब विस्तार पूर्वक बताया।

कार्यक्रम की संपूर्ण व्यवस्था अत्यंत प्रशंसनीय सिद्ध हुई, दोनों दिन पंडाल आर्यजनों की उपस्थिति से खचाखच भरा रहा, भोजन की संपूर्ण व्यवस्था उत्तम थी, सुविधा पूर्ण आवास सबको पसंद आए, सभी आर्यजनों ने कार्यक्रम से पूर्व और समापन के बाद मुंबई में दर्शनीय स्थलों, समुद्र किनारे की सैर जी भरकर की। ईश्वर की कृपा से यह ऐतिहासिक आयोजन सफलता पूर्वक संपन्न हुआ।

-सम्पादक

वैदिक संस्कृति के प्रणेता थे मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीरामचन्द्र जी - विनय आर्य

आर्य समाज साकेत द्वारा रामनवमी का आयोजन सम्पन्न

6 अप्रैल 2025 को आर्य समाज साकेत द्वारा रामनवमी का कार्यक्रम हर्षोल्लास से मनाया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के यशस्वी महामंत्री श्री विनय जी आर्य रहे। सर्वप्रथम विशेष यज्ञ का आयोजन हुआ तत्पश्चात श्रीमती उषा चांदना जी व श्रीमती सुधा खेड़ा जी के श्री राम के संबंध में सुमधुर भजन हुए। भजनों के पश्चात युवा वैदिक विद्वान आचार्य वीरेंद्र जी का श्री राम के संबंध में सारगर्भित प्रवचन हुआ। आचार्य वीरेंद्र जी के प्रवचन के बाद कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री विनय आर्य जी ने वर्तमान परिस्थितियों में भारतीय संस्कृति व श्री राम पर हो रहे आक्रमण के बारे में विस्तार से उदाहरण सहित बताया जिसका सभी श्रोताओं पर व्यापक प्रभाव रहा। श्रोताओं ने बहुत सारे प्रश्न श्री राम के संबंध में श्री विनय आर्य जी के समक्ष रखें जिसका उन्होंने विद्वत्ता पूर्ण उत्तर दिया। जिसकी सभी ने सराहना की। इस अवसर पर दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मंडल के महामंत्री श्री रवीन्द्र आर्य जी भी उपस्थित रहे। आर्य समाज साकेत के मंत्री आचार्य मनजीत कुमार ने समाज के नये भवन की आवश्यकता के बारे में विस्तार से बताया व प्रस्तावित नये भवन की रूप रेखा उपस्थित आर्य जनों के समक्ष रखी जिसका सभी ने स्वागत किया। इस अवसर पर श्री विनय आर्य जी के करकमलों से नये भवन के निर्माणार्थ आर्थिक सहयोग की अपील परिपत्र का उद्घाटन हुआ। श्री आर्य जी ने इस पवित्र कार्य में अधिकाधिक सहयोग की अपील आर्यजनों से की। इस अवसर पर आर्य समाज साकेत की ओर से 51000/- की छोटी सी राशि आर्य प्रतिनिधि सभा के जनोपयोगी कार्यों में सभा मंत्री जी को भेंट की गई। कार्यक्रम के पश्चात समाज प्रधान श्री सुभाष चन्द्र चांदना ने सभी का धन्यवाद किया व शांति पाठ के साथ कार्यक्रम संपन्न हुआ। *- मन्त्री*

200वीं जयन्ती एवं 150वें आर्यसमाज स्थापना वर्ष के अवसर पर छत्तीसगढ़ में

धर्मरक्षा महायज्ञ एवं वैदिक सनातन संस्कृति सम्मेलन

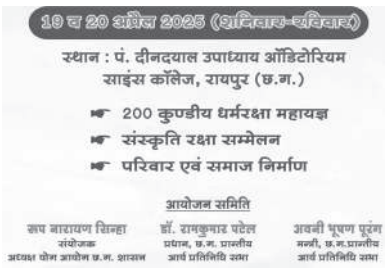

साप्ताहिक
आर्य सन्देश

सोमवार 14 अप्रैल, 2025 से रविवार 20 अप्रैल, 2025
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं. डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2024-25-2026
LPC, DRMS, दिल्ली-6 में पोस्ट करने की तिथि 17-18-19/04/2025 (वीर-शुक्र-शनिवार)
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2024-25-26
आर.एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 16 अप्रैल, 2025

महर्षि दयानन्द सरस्वती की 200वीं जयन्ती
150वें आर्यसमाज स्थापना वर्ष
के ऐतिहासिक अवसर पर

साप्ताहिक आर्य सन्देश

150वां आर्यसमाज स्थापना वर्ष विशेषांक का प्रकाशन

समस्त आर्यजनों, आर्य समाजों, आर्य संस्थाओं एवं सम्मापित पाठकों को जानकर हर्ष होगा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती एवं 150वें आर्यसमाज स्थापना वर्ष के अवसर पर साप्ताहिक आर्य सन्देश के विशेषांक **"150वां आर्य समाज स्थापना वर्ष"** का प्रकाशन किया जा रहा है। जिसमें महर्षिकृत सत्यार्थ प्रकाश आदि ग्रंथ, महषि दयानन्द सरस्वती के व्यक्तित्व, सेवा कार्य, उनके जीवन से जुड़े प्रेरक प्रसंग, आर्य समाज के गौरवशाली इतिहास, आर्य समाज द्वारा किए गए विभिन्न सफल आंदोलन, यज्ञ, योग, स्वाध्याय, सत्संग, सेवा, साधना और समर्पण आदि विषयों पर शोधपरक लेख, कविताएं, रचनाएं, प्रेरक प्रसंग एवं संस्मरण आदि प्रकाशित किए जाएंगे।

अत: समस्त वैदिक विद्वानों, लेखकों, भजनोपदेशकों एवं कवि महानुभावों से निवेदन है कि उपरोक्त विषयों पर अपने मौलिक एवं अप्रकाशित लेख एवं रचनाएं प्रकाशनार्थ भेजने की कृपा करें। इसके साथ ही समस्त प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभाओं, आर्य समाजों, विद्यालयों, गुरुरुकुलों, शिक्षण संस्थाओं, आर्य प्रतिष्ठानों और उद्योगपति परिवारों से सहयोग रूप में विज्ञापन भी सादर आमन्त्रित किए जाते हैं।

विशेषांक का आकार 23x36x8 (A4 Size) होगा एवं विज्ञापन दर निम्न प्रकार हैं -

विज्ञापन का आकार	विज्ञापन दर (रंगीन)	विज्ञापन दर (श्याम-श्वेत)
पूरा पृष्ठ	10000/- रुपये	7500/- रुपये
आधा पृष्ठ	5000/- रुपये	4000/- रुपये

इसके साथ ही **कवर पृष्ठ विज्ञापन - अन्तिम पृष्ठ हेतु 51000/-** रुपये एवं **कवर पृष्ठ 2 एवं 3 हेतु 31000/- रुपये** की की सहयोग राशि निर्धारित की गई है।

कृपया अपना विज्ञापन सहयोग एवं प्रकाशनार्थ सामग्री **'आर्य सन्देश साप्ताहिक'** के नाम **'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001'** के पते पर भेजें या **aryasandeshdelhi@gmail.com** पर ईमेल करें। - ***सम्पादक***

प्रतिष्ठा में,

आर्थिक रूप से कमजोर छात्रों की उच्च शिक्षा के लिए छात्रवृति योजना

आर्य प्रगति छात्रवृत्ति परीक्षा 2025

- पात्रता: आवेदन प्राप्ति की अंतिम तिथि तक बारहवीं कक्षा या समकक्ष कक्षा में उत्तीर्ण होना।
- आयु सीमा: आवदेन की अंतिम तिथि तक 16 से 25 वर्ष ।
- छात्रवृत्ति हेतु अभ्यर्थियों की लिखित परीक्षा एवं साक्षात्कार के आधार पर चयन किया जाएगा।
- परीक्षा ऑनलाइन बहुकल्पिक प्रश्नों के माध्यम से ली जाएगी।
- पात्रता परीक्षा का विषय सामान्य ज्ञान, गणित और साधारण विज्ञान पर आधारित होगा।

आवदेन की अन्तिम तिथि : 30-06-2025

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें:
9311721172
E-mail: dss.pratibha@gmail.com

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा विद्या दर्शन ऑफसैट प्रिंटर्स, यूनिट नं.-21, प्रधान कॉम्प्लेक्स, मेन रोड मंडावली, दिल्ली-92 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह